AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

यह पुस्तक भारत की सभी शिक्षक पात्रता परीक्षाओं की तैयारी के लिए अत्यंत उपयोगी है

बाल विकास

एवं शिक्षाशास्त्र का

PAPER LEAK*

2600+

ऐसे प्रश्नों का संग्रह जो पेपर सैटर्स कभी नहीं चाहते कि आपको मालूम हो

हमारा विश्वास है कि इन प्रश्नों के संग्रह का अध्ययन करने से आप किसी भी परीक्षा में इस विषय के 80% - 90% प्रश्न आसानी से हल कर सकेंगे

Code	Price	Pages
CB430	₹ 219	284

बाल विकास के पूर्व प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट

क्रमांक	परीक्षा	परीक्षा दिनांक/समय	प्रश्नों की संख्या
	UPTET		
1.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	18 Nov. 2018	2 × 30 = 60
2.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	15 Oct. 2017	2 × 30 = 60
3.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	02 Feb. 2016	2 × 30 = 60
4.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	19 Dec. 2016	2 × 30 = 60
5.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	23 Feb. 2014	2 × 30 = 60
6.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	27 June 2013	2 × 30 = 60
7.	UPTET (I-V) & (VI-VIII)	13 Nov. 2011	2 × 30 = 60
	CTET		
8.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	8 Dec. 2019	2 × 30 = 60
9.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	7 July 2019	2 × 30 = 60
10.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	9 Dec. 2018	2 × 30 = 60
11.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	21 Feb. 2016	2 × 30 = 60
12.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	18 Sep. 2016	2 × 30 = 60
13.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	22 Feb. 2015	2 × 30 = 60
14.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	20 Sep. 2015	2 × 30 = 60
15.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	16 Feb. 2014	2 × 30 = 60
16.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	21 Sep. 2014	2 × 30 = 60
17.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	28 July 2013	2 × 30 = 60
18.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	18 Nov. 2012	2 × 30 = 60
19.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	29 June 2012	2 × 30 = 60
20.	CTET (I-V) & (VI-VIII)	26 June 2011	2 × 30 = 60
	MP TET		
21.	MP TET (I-V)	2011	30
	Uttarakhand TET		
22.	Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)	22 Jan 2017	2 × 30 = 60
23.	Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)	28 April 2015	2 × 30 = 60
24.	Uttarakhand TET (I-V)	2014	30

25.	Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)	12 Nov. 2013	2 × 30 = 60
26.	Uttarakhand TET (I-V)	29 Jan. 2011	30
	Bihar TET		
27.	Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)	2011	2 × 30 = 60
28.	Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)	2013	2 × 30 = 60
	Chhattisgarh TET		
29.	Chhattishgarh TET (I-V) & (VI-VIII)	2011	2 × 30 = 60
30.	Chhattishgarh TET (VI-VIII)	2014	30
	Rajasthan TET		
31.	Rajasthan (I-V) & (VI-VIII)	2019	2 × 30 = 60
32.	Rajasthan (I-V) & (VI-VIII)	2011	2 × 30 = 60
33.	Rajasthan (I-V) & (VI-VIII)	2012	2 × 30 = 60
34.	Rajasthan (I-V) & (VI-VIII)	2016	2 × 30 = 60
	Punjab TET		
35.	Punjab (I-V) & (VI-VIII)	2011	2 × 30 = 60
	Jharkhand TET		
36.	Jharkhand (I-V)	2011	30
	Haryana TET		
37.	Haryana TET Level-III (I-V)	2019	30
38.	Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)	2011	2 × 30 = 60
39.	Haryana TET Level-III & (I-V)	2011	30
40.	Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)	2012	2 × 30 = 60
41.	Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)	2014	2 × 30 = 60
42.	Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)	2015	2 × 30 = 60
	MS TET 2018		
43.	1 March to 10 March	2018	170
44.	16 March to 28 March	2018	140
	HS TET 2018		
45.	1 Feb. to 11 Feb.	2018	200

नोट–उपरोक्त प्रश्न–पत्रों के विश्लेषण के उपरान्त TET से सम्बन्धित कुल 2692 प्रश्नों को अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है, जिससे प्रतियोगी, प्रश्न पूछे जाने की तकनीक का ज्ञान होने से लाभान्वित होंगे।

'बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र का PAPER LEAK' के अन्तर्गत प्रश्नों की संख्या का अध्यायवार प्रस्तुतिकरण

अध्याय		प्रश्नों की संख्या
अध्याय 1	बाल विकास : अर्थ, क्षेत्र एवं आवश्यकता	29
अध्याय 2	विकास की अवधारणा और अधिगम के साथ उसका सम्बन्ध, अवस्थाएँ	223
अध्याय 3	बालकों के विकास का सिद्धान्त	60
अध्याय 4	वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव	70
अध्याय 5	समाजीकरण की प्रक्रियाएँ	51
अध्याय 6	पियाजे, कोहलबर्ग एवं वाइगोत्स्की का सिद्धान्त	244
अध्याय 7	बालकेन्द्रित और प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणाएँ	71
अध्याय 8	बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित सदर्श एवं बहु–आयामी बौद्धिकता	165
अध्याय 9	भाषा और चिन्तन	91
अध्याय 10	समाज निर्माण के रूप में लिंग की भूमिकाएँ, लिंग पूर्वाग्रह और शैक्षिक व्यवहार	60
अध्याय 11	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	53
अध्याय 12	आकलन, मूल्यांकन तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन	128
अध्याय 13	उपलब्धि परीक्षण	31
अध्याय 14	व्यक्तित्व	91
अध्याय 15	समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना	160
अध्याय 16	अधिगम सम्बन्धी समस्याएँ, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना	199
अध्याय 17	मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की अवश्यकताओं को समझना	61
अध्याय 18	अधिगम का अर्थ एवं सिद्धान्त	273
अध्याय 19	शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ	268
अध्याय 20	बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं ?	47
अध्याय 21	अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ, बालकों की अधिगम कार्य-नीतियाँ, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक सन्दर्भ	49
अध्याय 22	एक समस्या समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक	27
अध्याय 23	बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना	35
अध्याय 24	बोध और संवेदनाएँ	75
अध्याय 25	अभिप्रेरणा एवं अधिगम	114
अध्याय 26	अधिगम में योगदान देने वाले कारक (व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय)	17

विषय-सूची

अध्याय *पृष्ठ संख्या*

भाग 1—बाल विकास और अध्यापन

1. बाल विकास : अर्थ, क्षेत्र एवं आवश्यकता **1-4**

- बाल विकास की संकल्पना
- बाल विकास का अर्थ
- बाल विकास का क्षेत्र
- बाल विकास की आवश्यकता
- महत्वपूर्ण बिन्दु

2. विकास की अवधारणा और अधिगम के साथ उसका सम्बन्ध, अवस्थाएँ **5-26**

- वृद्धि एवं विकास की संकल्पना
- वृद्धि एवं विकास का अर्थ
- विकास की विशेषताएँ
- वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- बाल विकास की अवस्थाएँ
- शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था
- शारीरिक विकास
- मानसिक विकास
- संवेगात्मक विकास
- भाषा विकास
- संज्ञानात्मक विकास
- नैतिक विकास
- विकास और अधिगम में सम्बन्ध
- महत्वपूर्ण बिन्दु

3. बालकों के विकास का सिद्धान्त **27-34**

- बाल विकास के सिद्धान्त
- बाल विकास के सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व
- महत्वपूर्ण बिन्दु

4. वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव **35-42**

- वंशानुक्रम तथा वातावरण का अर्थ
- वातावरण के प्रकार
- वंशानुक्रम का नियम
- वंशानुक्रम की प्रक्रिया
- बालक पर वंशानुक्रम का प्रभाव
- बालक पर वातावरण का प्रभाव
- बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका
- महत्वपूर्ण बिन्दु

5. समाजीकरण की प्रक्रियाएँ **43-48**

- समाजीकरण का अर्थ
- समाजीकरण की विशेषताएँ
- समाजीकरण के स्तर या अवस्थाएँ
- समाजीकरण के निर्धारक
- समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका
- समाजीकरण की प्रक्रिया में अभिभावक की भूमिका
- समाजीकरण की प्रक्रिया में मित्र की भूमिका
- महत्वपूर्ण बिन्दु

6. पियाजे, कोहलबर्ग एवं वाइगोत्स्की का सिद्धान्त **49-73**

- पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
- पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त
- वाइगोत्स्की का सिद्धान्त
- कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त
- महत्वपूर्ण बिन्दु

7. बालकेन्द्रित और प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणाएँ **74-81**

- बालकेन्द्रित शिक्षा
- प्रगतिशील शिक्षा के विकास में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त
- बालकेन्द्रित शिक्षा की विशेषताएँ
- बालकेन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य
- बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका
- बालकेन्द्रित शिक्षा का महत्व
- बालकेन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप
- बालकेन्द्रित शिक्षा के सिद्धान्त
- प्रगतिशील शिक्षा का महत्व
- प्रगतिशील शिक्षा का अर्थ
- महत्वपूर्ण बिन्दु

8. बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित सदर्श एवं बहु–आयामी बौद्धिकता 82-98

- बुद्धि की संकल्पना
- बुद्धि का अर्थ
- बुद्धि की विशेषताएँ
- बुद्धि के प्रकार
- बुद्धि के सिद्धान्त
- भारत में बुद्धि परीक्षण
- बुद्धि के मापन
- बुद्धि परिक्षण के प्रकार
- मानसिक आयु व बुद्धि-लब्धि
- बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता
- बहु-आयामी बुद्धि सिद्धान्त
- बहु-आयामी बुद्धि सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ
- महत्वपूर्ण बिन्दु

9. भाषा और चिन्तन 99-107

- भाषा का अर्थ
- भाषा एवं चिन्तन
- भाषा का महत्व
- भाषा का प्रयोग
- पियाजे के विचार
- भाषा की विशेषताएँ
- विचार का अर्थ
- भाषा व सम्प्रेषण
- भाषा के घटक
- भाषा में विचारों के प्रकार
- महत्वपूर्ण बिन्दु

10. समाज निर्माण के रूप में लिंग की भूमिकाएँ, लिंग पूर्वाग्रह और शैक्षिक व्यवहार 108-114

- लिंग की भूमिका
- लिंग पूर्वाग्रह (विभेद)
- लिंग पूर्वाग्रह (विभेद) के प्रकार
- लिंग पूर्वाग्रह (विभेद) के शैक्षिक अभ्यास
- महत्वपूर्ण बिन्दु

11. व्यक्तिगत विभिन्नताएँ 115-121

- व्यक्तिगत विभिन्नता का अर्थ
- व्यक्तिगत विभिन्नता को भाषा, जाति, लिंग, समुदाय के आधार पर समझना
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार एवं पहचान
- व्यक्तिगत विभिन्नता की विशेषताएँ
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अध्ययन की विधियाँ
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के स्रोत
- महत्वपूर्ण बिन्दु

12. आकलन, मूल्यांकन तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन 122-135

- आकलन का अर्थ
- आकलन की विशेषताएँ
- आकलन का क्षेत्र
- आकलन का महत्व
- आकलन के रूप
- अधिगम के लिए आकलन और अधिगम का आकलन में अन्तर
- विद्यालय आधारित आकलन
- विद्यालय आधारित आकलन की विशेषताएँ
- मूल्यांकन का अर्थ
- मूल्यांकन के उद्देश्य
- मूल्यांकन का वर्गीकरण
- मूल्यांकन के उपकरण व प्रविधियाँ
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता तथा महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लाभ
- महत्वपूर्ण बिन्दु

13. उपलब्धि परीक्षण 136-139

- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण
- उपलब्धि परीक्षणों की विशेषताएँ
- उपलब्धि परीक्षणों का महत्व
- उपलब्धि परीक्षण के प्रकार
- महत्वपूर्ण बिन्दु

14. व्यक्तित्व 140-147

- व्यक्तित्व का अर्थ
- व्यक्तित्व के प्रकार
- अच्छे व्यक्तित्व की विशेषताएँ
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक
- व्यक्तित्व के सिद्धान्त
- व्यक्तित्व के मापन
- व्यक्तित्व के मापन की विधियाँ
- महत्वपूर्ण बिन्दु

भाग 2–समावेशी शिक्षा : निर्देशन एवं परामर्श

15. समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना 148-164

- समावेशित शिक्षा की अवधारणा
- सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठन

- विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की अवधारणा
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों के प्रकार
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी. एल. एम. एवं अभिवृत्तियाँ
- समावेशी बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ
- जिला चिकित्सालय
- पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
- महत्वपूर्ण बिन्दु
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की पहचान एवं लक्षण
- वंचित एवं अलाभान्वित वर्ग वाले बालक
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श
- मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायटमेंटर
- समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
- बाल अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

16. अधिगम सम्बन्धी समस्याएँ, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना **165-184**

- पिछड़े बालकों का अर्थ
- पिछड़े बालकों की पहचान
- मानसिक मन्दित बालकों की विशेषताएँ
- समस्यात्मक बालकों की विशेषताएँ
- सीखने की कम क्षमता वाले बालक
- बाल अपराधी बालकों का अर्थ
- बाल अपराध के प्रकार
- श्रवण बाधित बालकों की विशेषताएँ
- श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा
- दृष्टि बाधित बालकों का वर्गीकरण
- दृष्टि बाधिता के कारण
- वाक् विकलांग बालक
- महत्वपूर्ण बिन्दु
- पिछड़े बालकों की विशेषताएँ
- पिछड़ेपन के कारण
- मानसिक मन्दित बालकों के प्रकार
- समस्यात्मक बालकों के प्रकार
- सीखने की कम क्षमता वाले बालकों की विशेषताएँ
- बाल अपराधी बालकों के लिए शैक्षिक प्रावधान
- श्रवण बाधित बालकों के कारण
- दृष्टि बाधित बालकों की विशेषताएँ
- दृष्टि बाधित बालकों के शैक्षिक प्रावधान
- वाक् विकलांग बालकों की विशेषताएँ
- पिछड़ेपन के प्रकार
- मानसिक मन्दित बालकों का अर्थ
- समस्यात्मक बालकों का अर्थ
- समस्यात्मक बालकों के कारण
- सीखने की कम क्षमता वाले बालकों की शिक्षा
- बाल अपराधी बालकों की विशेषताएँ
- श्रवण बाधित बालक
- श्रवण बाधित बालकों का वर्गीकरण
- दृष्टि बाधित बालक
- दृष्टि बाधित बालकों की पहचान
- आंशिक दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा
- वाक् विकलांगता के कारण

17. मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना **185-191**

- प्रतिभाशाली बालक का अर्थ
- प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा
- सृजनशील बालकों की पहचान
- महत्वपूर्ण बिन्दु
- प्रतिभाशाली बालकों की पहचान
- सृजनशील बालकों का अर्थ
- सृजनशील बालकों की शिक्षा
- प्रतिभाशाली बालकों की समस्याएँ
- सृजनशील बालकों की विशेषताएँ
- विशेष योग्यता वाले बालक

18. अधिगम का अर्थ एवं सिद्धान्त **192-215**

- अधिगम की संकल्पना तथा अर्थ
- अधिगम की विशेषताएँ
- अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ
- थॉर्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त
- स्किनर का सक्रिय अनुबन्धन का सिद्धान्त
- पियाजे का सिद्धान्त
- अधिगम वक्र का अर्थ
- अधिगम में पठार का अर्थ
- अधिगम में पठार का निराकरण
- अधिगम की प्रक्रिया
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- अधिगम के नियम
- पावलव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त
- कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त
- वाइगोत्स्की का सिद्धान्त
- अधिगम वक्र के प्रकार
- अधिगम में पठार के कारण
- महत्वपूर्ण बिन्दु

19. शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ **216-241**

- शिक्षण का अर्थ एवं उद्देश्य
- शिक्षण के सूत्र
- सूक्ष्म शिक्षण
- सम्प्रेषण
- शिक्षण प्रविधियाँ
- शिक्षण के आधारभूत कौशल
- शिक्षण के सिद्धान्त
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)
- महत्वपूर्ण बिन्दु

भाग 3—अधिगम और अध्यापन

20. बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं? 242-247

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं?
- बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं?
- महत्वपूर्ण बिन्दु

21. अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ, बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक सन्दर्भ 248-253

- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ
- बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ
- सामाजिक क्रिया-कलाप के रूप में अधिगम
- अधिगम के सामाजिक सन्दर्भ
- महत्वपूर्ण बिन्दु

22. एक समस्या समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक 254-257

- समस्या समाधान का अर्थ
- समस्या समाधान की विशेषताएँ
- समस्या समाधान के पद
- समस्या समाधान की विधियाँ
- समस्या समाधान को प्रभावित करने वाले कारक
- समस्या समाधान की वैज्ञानिक विधि
- समस्या समाधान का महत्व
- बालक एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में
- महत्वपूर्ण बिन्दु

23. बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना 258-261

- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना
- अधिगम प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना
- महत्वपूर्ण बिन्दु

24. बोध और संवेदनाएँ 262-269

- संज्ञान का अर्थ
- संवेगों के प्रकार
- संवेग के पहलू
- संवेग की विशेषताएँ
- संवेगों का अर्थ
- संवेगों का नियन्त्रण
- संज्ञान की विशेषताएँ
- संवेगों का प्रभाव या महत्व
- महत्वपूर्ण बिन्दु

25. अभिप्रेरणा एवं अधिगम 270-281

- अभिप्रेरणा का अर्थ
- अभिप्रेरणा और अधिगम में सम्बन्ध
- आवश्यकता, अन्तर्नोद और प्रोत्साहन में सम्बन्ध
- अभिप्रेरणा के प्रकार
- अधिगम हेतु निहितार्थ
- अभिप्रेरणा की अधिगम प्रक्रिया में भूमिका
- अभिप्रेरणा की प्रविधियाँ
- अभिप्रेरणा की विशेषताएँ
- सीखने के मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा का महत्व व उपयोग
- महत्वपूर्ण बिन्दु

26. अधिगम में योगदान देने वाले कारक (व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय) 282-283

- अधिगम में योगदान देने वाले कारक
- व्यक्तिगत
- पर्यावरण
- महत्वपूर्ण बिन्दु

भाग 1—बाल विकास और अध्यापन

अध्याय–1

बाल विकास : अर्थ, क्षेत्र एवं आवश्यकता

नीचे दिए हुए विषयों से सम्बन्धित प्रश्न इस अध्याय में सम्मिलित हैं

- बाल विकास की संकल्पना
- बाल विकास का अर्थ
- बाल विकास का क्षेत्र
- बाल विकास की आवश्यकता

1. शिक्षा मनोविज्ञान है—
(A) व्यावहारिक विज्ञान
(B) मानक विज्ञान
(C) विशुद्ध विज्ञान
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Haryana TET Paper–I (Class I-V) 2011

1. (B) शिक्षा मनोविज्ञान को मानक विज्ञान माना गया है जिसके द्वारा व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा प्रदान जाती है। इसके द्वारा मानव के व्यवहार को परिवर्तित, मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकता है।

2. मानव विकास को क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है जो हैं—
(A) शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक
(B) संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक
(C) मनोवैज्ञानिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक
(D) शारीरिक, आध्यात्मिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक

CTET Paper–I (Class I-V) 29 Jan. 2012

2. (A) मानव विकास को शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है।

3. प्रारम्भ में आत्मा का प्रयोग किस शास्त्र में किया जाता था ?
(A) शिक्षाशास्त्र (B) समाजशास्त्र
(C) दर्शनशास्त्र (D) अर्थशास्त्र

Bihar TET Paper–II (Class VI-VIII) 2013

3. (C) दर्शनशास्त्र ज्ञान का वह क्षेत्र है, जो सत्य और प्रकृति के सिद्धान्तों और उनके कारणों का विवरण करता है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है। अतः दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध आत्मा से होता है, जिसमें व्यक्ति की आत्मा (अन्तर्निहित ज्ञान) का अध्ययन किया जाता था।

4. विकासात्मक मनोविज्ञान में जीवन का अध्ययन किया जाता है—
(A) किशोरावस्था में (B) जीवनपर्यन्त
(C) जन्म से (D) गर्भकाल में

Bihar TET Paper–I (Class I-V) 2013

4. (C) विकासात्मक मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसका अध्ययन जन्म से प्रौढ़ावस्था तक किया जाता है।
मनुष्य जीवन चरणबद्ध तरीके से आगे की तरफ बढ़ता है—
(i) शैशवावस्था (ii) बाल्यावस्था
(iii) किशोरावस्था (iv) प्रौढ़ावस्था
विकासात्मक मनोविज्ञान का अर्थ व्यक्ति के विकास के साथ ही उसके व्यवहार का अध्ययन है।

5. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि—
(A) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(B) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(C) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके
(D) इससे शिक्षक को आत्म-सन्तुष्टि मिल सके

Bihar TET Paper–I (Class I-V) 2013

5. (C) मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार से होता है। शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।

6. 1882 ई. में किस मनोवैज्ञानिक द्वारा लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया गया ?
(A) गाल्टन (B) अल्फ्रेड बिने
(C) वुडवर्थ (D) कैटेल

Bihar TET Paper–II (Class VI-VIII) 2013

6. (B) अल्फ्रेड बिने मनोवैज्ञानिक ने 1882 में लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया था।

7. प्रयोगात्मक विधि को सर्वप्रथम प्रस्तावित किया—
(A) राइस एवं कार्नमैन ने
(B) वुड ने
(C) कोलिन्स व ड्रेवर ने
(D) विलहेल्म वुण्ट ने

Haryana TET Paper–I (Class I-V) 1 Feb. 2014

7. (D) विलहेल्म वुण्ट जर्मनी के दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। विलहेल्म वुण्ट ने 1861 में मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक विधि का प्रारम्भ किया था, इसलिए उन्हें प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का पिता भी कहा जाता है।

8. बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान है—
(A) अध्यापक का (B) प्रशासक का
(C) बालक का (D) अभिभावक का

UPTET Paper–II (Class VI-VIII) 23 Feb. 2014

8. (C) बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में बालक का प्रमुख स्थान होता है। वर्तमान समय में बालकों को बालकेन्द्रित शिक्षा प्रदान की जाती है। बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षा, शिक्षण पद्धति बालक की की रुचि के अनुसार निर्धारित की जाती है।

9. बाल मनोविज्ञान का केन्द्र-बिन्दु है—

(A) विद्यालय (B) शिक्षण प्रक्रिया

(C) बालक (D) अच्छा शिक्षक

UPTET Paper–I (Class I-V) 23 Feb. 2014

9. (C) बाल मनोविज्ञान का मुख्य केन्द्र-बिन्दु बालक होता है, क्योंकि इसके द्वारा ही बालक में होने वाले शारीरिक परिवर्तन एवं व्यावहारिक परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।

***10.** बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन-सा कथन सर्वोत्तम है ?

(A) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है

(B) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं

(C) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं

(D) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं

UPTET Paper–I (Class I-V) 23 Feb. 2014

10. (A) बाल मनोविज्ञान के आधार पर प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है। उसमें विशिष्ट योग्यता व क्षमता होती है। इसलिए शिक्षा बच्चों की रुचि एवं विशिष्टता के अनुसार होनी चाहिए।

***11.** मानव विकास.....है।

(A) मात्रात्मक

(B) गुणात्मक

(C) कुछ सीमा तक अमापनीय

(D) (A) और (B) दोनों

CTET 2014 (I-V)

11. (D) मानव विकास मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों रूपों में होता है। मात्रात्मक में लम्बाई, भार, विभिन्न अंगों के आकार का बढ़ना आदि अध्ययन किया जाता है, जबकि गुणात्मक में योग्यता, क्षमता, अभिवृत्ति, बुद्धि, व्यक्तित्व, रुचि, चिन्तन आदि में अध्ययन किया जाता है।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प शिक्षा मनोविज्ञान की एक सीमा है ?

(A) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान

(B) कक्षा की समस्याओं का समाधान

(C) बालक केन्द्रित शिक्षा

(D) वैयक्तिक विभिन्नताओं की समस्या

Haryana TET Paper–I (Class I-V) 2015

12. (D) वैयक्तिक विभिन्नताओं की समस्या शिक्षा मनोविज्ञान की एक सीमा है।

13. मनोविज्ञान प्रारम्भ में किस विषय का अंग था ?

(A) दर्शनशास्त्र (B) नीतिशास्त्र

(C) तर्कशास्त्र (D) भौतिकी

Haryana TET Paper–II (Class VI-VIII) 2015

13. (A) मनोविज्ञान प्रारम्भ में दर्शनशास्त्र का विषय माना जाता था। मनोविज्ञान का जन्म ही दर्शनशास्त्र से हुआ है इसलिए मनोविज्ञान का प्रारम्भिक विषय 'आत्मा' कहा गया। Psychology दो शब्दों से मिलकर बना है—Psych + logos। Psych का अर्थ आत्मा तथा logos का अर्थ अध्ययन होता है। अतः अंग्रेजी शब्द Psychology का शाब्दिक अर्थ 'आत्मा का अध्ययन' है।

***14.** बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है—

(A) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(B) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(C) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(D) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

UPTET Paper–I (Class I-V) 2 Feb. 2016

14. (D) बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत गर्भावस्था से किशोरावस्था तक की विशेषताओं का अध्ययन करते हैं, ठीक उसी प्रकार बाल मनोविज्ञान के अन्दर बालक व्यवहार के परिवर्तन का विश्लेषण करते हुए उसका अध्ययन किया जाता है तथा अलग-अलग अवस्थाओं के बालक के विकास को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया जाता है।

15. मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है—

(A) विषम केन्द्रित शिक्षा

(B) शिक्षक केन्द्रित शिक्षा

(C) क्रिया केन्द्रित शिक्षा

(D) बाल केन्द्रित शिक्षा

UPTET Paper–I (Class I-V) 2 Feb. 2016

15. (D) मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है, बाल केन्द्रित शिक्षा के विकास में होता है। मनोविज्ञान के द्वारा ही शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया जिसके परिणामस्वरूप बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करके सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है।

16. ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को संजोये है।'' कथन था—

(A) टिचनर का (B) वुण्ट का

(C) वुडवर्थ का (D) मैक्डूगल का

UPTET Paper–I (Class VI-VII) 2 Feb. 2016

16. (C) **वुडवर्थ** के शब्दों में—''सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया फिर इसने मन का त्याग किया। पुनः इसने चेतना का त्याग किया। अब वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।''

17. निम्न में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है ?

(A) अन्तर्दर्शन (B) बहिर्दर्शन

(C) अवलोकन (D) प्रयोगीकरण

UPTET Paper–II (Class VI-VIII) 15 Oct. 2016

17. (A) शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि अन्तर्दर्शन विधि होती है। जिसके द्वारा विद्यार्थी या व्यक्ति के जीवन के इतिहास जाना जाता हैं।

18. बाल विकास में—

(A) प्रक्रिया पर बल है

(B) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल है

(C) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है

(D) उपरोक्त सभी

18. (C) बाल विकास का व्यापक अर्थ है जिसमें बालक के गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है और इसके साथ ही शारीरिक, मानसिक एवं व्यावहारिक परिवर्तनों का भी अध्ययन किया जाता है।

***19.** बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है—

(A) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

(B) बाल विकास का विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन

(C) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन

(D) उपरोक्त सभी

19. (D) मनुष्य के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अन्त तक उनमें होने वाले जैविक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को बाल विकास कहा जाता है तथा इसके अन्तर्गत हम बालक की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही बालक की वैयक्तिक भिन्नता का भी अध्ययन किया जाता है।

20. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है ?

(A) बच्चे यथावत् वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।

(B) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं।

(C) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।

(D) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।

20. (B) **जीन पियाजे** के अनुसार, ''बच्चे दुनिया के बारे में अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।'' सृजनात्मकता स्व-स्फूर्ति होती है, जिसकी अभिव्यक्ति छात्र स्वयं के ज्ञान से करता है।

***21.** बाल मनोविज्ञान तथा बाल विकास में प्रमुख अन्तर है—

(A) अध्ययन पद्धतियों में

(B) क्षेत्र में

(C) कार्य में

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. (B) बाल विकास बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ-साथ बालक को शारीरिक व्यवहार में रुचि तथा लक्ष्य में भी परिवर्तन होता है। बच्चों में आये परिवर्तनों के कारण तथा इस परिवर्तन से उनके व्यवहार में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करते है। यह परिवर्तन बच्चों में व्यक्तिगत होते हैं या सार्वभौमिक, इनका अध्ययन करता है, जबकि बाल मनोविज्ञान छात्र व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों का अध्ययन करता है।

***22.** बाल विकास इनका अध्ययन है—

(A) बालकों के विकास के विभिन्न पहलुओं का

(B) बालकों के व्यवहारों का

(C) विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों का

(D) उपर्युक्त सभी का

22. (D) बाल विकास बालक के सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, मौलिक व व्यावहारिक पहलुओं का अध्ययन करता है।

23. शैक्षणिक मनोविज्ञान.....के माध्यम से शिक्षा में योगदान देता है।

(A) विद्यार्थी की समस्याओं को समझने

(B) शिक्षक की समस्याओं को समझने

(C) पाठ्यक्रम को समझने

(D) शैक्षणिक समस्याओं को समझने

HSTET (11 Feb. 2019) Shift–2

23. (D) शैक्षणिक समस्याओं को समझने।

24. निम्नलिखित में से किसको 'मनोविश्लेषण के पिता' के रूप में वर्णित किया गया है ?

(A) सिगमण्ड फ्रायड

(B) एरिक एच. एरिक्सन

(C) अब्राहम मैस्लो

(D) जीन पियाजे

HSTET 2018 (5 Feb. 2019) Shift–1

24. (A) सिगमण्ड फ्रायड।

25. बाल विकास में गुणात्मक परिवर्तन की पहचान करें—

(A) वजन (B) दृष्टि

(C) बाल (D) दाँत

MSTET (28 Feb. 2019) Shift–1

25. (B) दृष्टि।

26. शैक्षणिक मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षक को सक्षम बनाता है कि वे—

(A) विद्यार्थियों का बेहतर मूल्यांकन करें

(B) विद्यार्थियों को अनुशासित करें

(C) विद्यार्थियों को बेहतर समझें

(D) पाठ्यक्रम को बेहतर ढंग से पढ़ायें

MSTET (9 Feb. 2019) Shift–1

26. (C) विद्यार्थियों को बेहतर समझें।

27. बाल विकास से तात्पर्य....., ...और .....परिवर्तनों से है जो जन्म और किशोरावस्था के अन्त के बीच होते हैं।

(A) जैविक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक

(B) गुणात्मक, अनुभवजन्य, मात्रात्मक

(C) बचपन, वयस्कता, किशोर

(D) बचपन, जल्दी, देर से

MSTET (6 March 2019) Shift–1

27. (A) जैविक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक।

28. बाल विकास निम्न से सम्बन्धित है—

(A) केवल मात्रात्मक परिवर्तन

(B) केवल गुणात्मक परिवर्तन

(C) गुणात्मक परिवर्तन, मात्रात्मक परिवर्तन के अनुरूप होते हैं

(D) गुणात्मक परिवर्तन, मात्रात्मक परिवर्तनों से स्वतंत्र हैं

MSTET (10 March 2019) Shift–1

28. (C) गुणात्मक परिवर्तन, मात्रात्मक परिवर्तनों के अनुरूप होते हैं।

29. "बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा जाता है।" यह परिभाषा दी है—

(A) मुर्रे (B) एडलर

(C) क्रो व क्रो (D) जे. बी. वाटसन

29. (C) **क्रो** व **क्रो** के अनुसार, ''बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा जाता है।''

REET 6-8 2015

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

1. शिक्षा का अर्थ उन सर्वमान्य विचारों को विकसित करना है जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में विलुप्त होती हैं। —**सुकरात**

2. ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।'' —**स्वामी विवेकानन्द**

3. 'psyche' का अर्थ होता है— —**आत्मा**

4. 'Psychology' का शाब्दिक अर्थ होता है— —**आत्मा का ज्ञान**

5. मनोविज्ञान की प्रकृति होती है— —**वैज्ञानिक**

6. किसके अनुसार, ''मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है।'' —**जेम्स**

7. ''विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है।'' कहाँ पर उल्लेख किया गया है ? —**यजुर्वेद में**

8. ''शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण विधियों के चयन में शिक्षक की सहायता करता है।'' कथन है— —**स्किनर का**

9. शिक्षा की दृष्टि से बालक की महत्वपूर्ण आवश्यकता है— —**बालकों के साथ मनोवैज्ञानिक व्यवहार की आवश्यकता**

10. शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार की आवश्यकता

क्यों है ? —**बालकों के आन्तरिक एवं बाह्य गुणों का पता लगाने तथा शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु**

11. ''मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार एवं आचरण का यथार्थ विज्ञान है।'' कथन है—

—**मैक्डूगल का**

12. मनोविज्ञान का तात्पर्य है—**व्यवहार का विज्ञान**

13. शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन किया जाता है—

—**मानव व्यवहार की शैक्षणिक परिस्थितियों का**

14. मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है

—**मन का विज्ञान**

15. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि

—**इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके**

16. ''मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है।'' किसका कथन है ? —**मोर्गन का**

17. मनोविज्ञान है— —**विधायक विज्ञान**

18. मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है, कथन है— —**स्किनर का**

19. शिक्षा को 'द्विध्रुवीय' किसने कहा ?

—**एडम्स**

20. मनोविज्ञान की उचित विषयवस्तु है —**व्यवहार**

21. शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र है— —**बालक**

●●